पाठ 16. गूँज उठी शहनाई

पाठ का उद्‌देश्य

प्रस्तुत पाठ प्रसिद्‌ध शहनाईवादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की शहनाईवादन के प्रति निष्ठा एवं लगन तथा देश-प्रेम को प्रकट कर रहा है। इस पाठ द्‌वारा बच्चे मेहनत करना, देश-प्रेम तथा अपने काम के प्रति ईमानदारी एवं निष्ठा रखने का महत्व सीख पाएँगे।

पाठ का सारांश

शहनाईवादन को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने वाले उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का जन्म बिहार में एक शहनाईवादक परिवार में हुआ था। शहनाई बजाने का हुनर उन्हें विरासत में मिला था। बिस्मिल्ला खाँ गंगा नदी के किनारे बालाजी मंदिर के प्रांगण में बैठकर शहनाई बजाने का अभ्यास किया करते थे। स्वाधीनता दिवस के अवसर पर उन्होंने लालकिले पर शहनाई बजाई थी। अपने मित्र से लगाई शर्त पर बिस्मिल्ला खाँ ने पाँच घंटे और पाँच मिनट तक लगातार शहनाई बजाई थी। उन्होंने अमरीका में बसने के प्रस्ताव को ठुकरा दिया था क्योंकि उनके हृदय में गंगा नदी के लिए असीम प्रेम समाया हुआ था। बिस्मिल्ला खाँ ने 'गूँज उठी शहनाई' तथा 'सनाधी अपन्ना' फ़िल्मों में संगीत निर्देशन का काम किया था। उन्हें 'भारत रत्न' की उपाधि से भी सम्मानित किया गया। शहनाईवादन के क्षेत्र में बिस्मिल्ला खाँ के योगदान को संरक्षित रखने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा है कि संगीत सबका है। इसमें जाति-पाँति का भेदभाव मत लाओ।

अध्यापन संकेत

पाठ पढ़ाने से पहले बिस्मिल्ला खाँ के बारे में बच्चों को संक्षिप्त रूप से बताएँ। पाठ की पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए कुछ अन्य मशहूर कलाकारों के बारे में बताएँ जैसे– सितारवादन – पंडित रविशंकर, बाँसुरीवादन – हरीप्रसाद चौरसिया।

देश-प्रेम का कोई उदाहरण देकर समझाएँ। इसके बाद कक्षा में पाठ का आदर्श वाचन करें एवं बच्चों से भी करवाएँ। प्रश्न पूछकर बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करें।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- बच्चों से पूछें कि क्या उन्होंने कभी किसी शादी-विवाह अथवा समारोह में शहनाई की धुन को सुना है?
- बच्चों को कौन-सा वाद्‌ययंत्र पसंद है? उससे संबंधित कुछ प्रश्न उनसे पूछें।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्‌यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।